श्री सत्यनाम

समर्थ जगजीवनदासाय नमः

आरती आश्रम समर्थ सतगुरु जगजीवन साहेब
श्री कोटवा धाम

दोहाः

सन्ध्या सुमिरन आरती, सुनहु वीर हनुमान
राम लक्ष्मण जानकी, सदा करहु कल्याण।

जगजीवन जग विदित प्रभु किहयो सरदहा वास
चेला जिनके प्रथम भे, धन्य गोसाई दास।

सतगुरु देवी दास के, जगजीवन महाराज
कृपा करौ आरती करौ, दीपक जरै समाधि।

चौपाईः

:: 1 ::

आरती सतगुरु समरथ तोरी, कहँ लगि कहौ केतिक मति मोरी।
सिव रहे तारी लाई न जाना, ब्रह्म चतुर मुख करहि बयाना ॥

शेष गनेश औ जपत भवानी, गति तुम्हार तिनहूँ नहिं जानी ।
विष्णु विनै मन मनिहि समाई, को बपुरा गति सकै न गाई ॥

ससि गन भान जती सुरसोई, सब महँ वास न दूजा कोई ।
संत तंत ते रहत हैं लागी, जेहि जस चहिं तस रहि रस पागी ॥

:: 2 ::

जगजीवन दास नहिं थाह अथाहा, कृपा करहु जनका निरवाहा।
आरती अरज लैहु सुनि मोरी, चरनन्ह लागि रहै दिढ़ डोरी ॥

कबहुं निकट ते टारहु नाहिं, निसिवासर मोहिं विसरहु नाहिं।
दीजे केतिक बात यह कीजे, अधक्रम मेटि सरन कर लीजे ॥

दासनि दास हूँ कहौं पुकारी, गुन नहिं मोहि तुम लेहु संवारी।
जगजीवन दास का आस तुम्हारी, तुम्हरिनि छवि मूरति पर वारी ॥

:: 3 ::

आरति कवन तुम्हारी करई, गति अपार केहु जानि न परई।
ब्रह्म शेष महेस गुन गावैं, सो तुम्हार कछु अंत न पावैं ॥

तुमही पवन औ तुमही पानी, तुम सब जीव जोति निरबानी।
नर्क स्वर्ग महँ वास तुम्हारी, कहुँ दुख है कहुँ सुख अधिकारी ॥

तुम सब मह सब तुमहि बनावा, रहि सब बस करि नाच नचावा।
दियो चेतानि करि तेइ तस पाया, जगजीवन दास कर करिये दाया ॥

:: 4 ::

आरती करौ नाम चितलाई, सब भ्रम मेहि तुरंतहि जाई।
ध्रुव प्रहलाद जो आरति गाई, खंभ फोरि प्रभु लीन्ह बचाई ॥

बाला पनमा नाम देव सुमिराई, तिन्ह कहँ दरस दीन्ह रघुराई।
दास कबीर जो आरति गाई, तूरि जंजीर पार प्रभु लाई ॥

संत रैदास जो आरति गाई, हरि के चरन कमल चितलाई।
तुलसी दास जो आरति गाई, चढ़ि वेवान सतलोकहि जाई ॥

दास मलूक जग रहे उदासा, सुमिरत नाम भये परगासा।
सब साधन मिलि आरति गाई, जगजीवन दास प्रभु की बलि जाइ ॥

:: 5 ::

आरती श्री हनुमान वीर की, राम दूत बलवान धीर की ।
सिय प्रसाद बल सुधि बुधि पाई, लाँघि समुद्र ताकी सुधि लाई ॥

वन उजारि रावन सुत मारा, लंका नगर निमिषि महँ जारा।
लोक सरब व्यापक रघुराई, सीता के सुधि प्रभुहिं सुनाई ॥

प्रभुहित मूरि सहित गिरि ल्याई, लखन जाग तहि आनि जगाई।
राम हेतु जम कातरि तोरा, बन्दी छोर कै बन्दी छोरा ॥

हनुमत तुम्है सुजस सुभ छाजै, राम कृपा जाके तिलक विराजै।
मेरे परम हित राम जिउ के प्यारे, आरति गावै दास दुलार ॥

:: 6 ::

आरति विनती नाम तुम्हारी, भक्त उधारन भौ भय हारी।
अर्ध नाम गजमनहिं उचारी, तजि गरुणासन आनि उबारी ॥

द्रुपदी नाम सरन जब भाखा, चीर बढ़ाई लाज प्रभु राखा।
नाम सोगनिकै सुवा पढ़ावा, दीन दयाल वेवान चढ़ावा ॥

कहँ लौ करौं मैं नाम बढ़ाई, दूलन दास नाम सरनाई।
आरति गुरु दाया जस गाई, केवल नाम भजन रस पाई ॥

:: 7 ::

गुरु दाया से उग्र ग्यान जहँ, धन्य भाग मन भजन सिखै तहँ।
गुरु दाया से दृिढ़ भा चेला, फिरि न करै तीरथ व्रत मेला ॥

गुरु दाया से भक्त कहावै, करम भरम कछु निकट न आवै।
प्रभु जगजीवन भजन सिखावा, देवी दास परगट जस गावा ॥

:: 8 ::

मन तुम सुमिरौं साध करारी, दीपक वरै नाम उजियारी।
तन मन सतगुरु कै फुलवारी, महकै केवल भँवर बलिहारी ॥

दुख दाहन सुख मोद बिहारी, सुख निधान जन की रखवारी।
वारौं सब कछु गर्भ नेबारी, हरौं जनम करम संसारी ॥

प्रभु जगजीवन कृपा तुम्हारी, देवी दास छवि निरिख निहारी ।
साहेब तुम जगजीवन स्वामी, जीव जन्तु घट अन्तरजामी ॥

:: 9 ::

दुलन दास औ देवीदासा, इन्हके घट सम्पूरण वासा।
ख्याम दास औ दास गोसाई, यै आये साहेब सरनाई ॥

उदै राम औ मंसा दासा, इनका साई तुम्हरिनि आसा।
जहँ जहँ प्रभु तुम दीन्हेउ ग्याना, मैं मति मंद कहन नहिं जाना ॥

दास नेवल बिनवै कर जोरे, कब अइहौ साहेब घट मोरे।
आरति अघविनास की करहूँ , जासु कृपा भव सागर तरहूँ।।

:: 10 ::

अघविनास सत भगत पुराना, समुझत सुनत उठत अरघाना।
अघविनास गति अकह अपारा, को त्रिभुवन मा पावै पारा ॥

अघविनास जै जै प्रभु तोरी, मोहि दयाल होइ दे सत डोरी।
प्रगट कीन्ह जगजीवन स्वामी, मंजु मनोहर गुन घन नामी ॥

यहि कलिकाल पाप लखि भारी, तब प्रभु रचा ग्रन्थ सुचिकारी।
जो यहि सुनै प्रीति करि कोई, जन्म जन्म अघ डारै धोई ॥

वज्र लेप अघ जेहि तन माही समुझत सुनत सकल जरि जाही।
गिरवर के जगजीवन प्यारे, कबहुँ न करौं चरन ते प्यारे।।

::11::

आरति अघनिवास की करहूँ , दोउ कर जोरि चरन सिर धरहूँ।

जेहि पर कृपा करहु जन जानी, जीवन मुक्त भये ते प्रानी ॥

अघविनास प्रभु नाम तुम्हारा, निरमल जोति सुजस उजियारा ॥

सन्त सिरोमनि लावैं ध्याना, पावैं अचल भक्ति वरदाना ॥

तुम सतगुरु सतगुरु की बानी, गिरवर सुरित चरन लपटानी ॥

:: 12 ::

आरति सतगुरु सब्द तुम्हारी, विनती करौ सीस महि धारी ॥

परम ग्रन्थ औ ग्यान प्रगासा, प्रलै कथा सब पाप विनासा ॥

चरन बंदगी कहरा नामा, महावीर अस्तुति सुख धामा ॥

बुद्धि वृद्धि विनवौं दिढ़ ध्याना, लीला मंगल सत सुख ग्याना ॥

दोहावली सब्द जुत बानी, बिनवौं सकल जोरि जुग पानी ॥

अघविनास आदि जो बानी, प्रभु जगजीवन जवन बखानी ॥

तेहि सप्ताह नेम करि कोई, सुनै कहै पारायन होई।

मन पूरना पढ़ै सब पढ़िकै, सुर पुर जाई वेवान पे चढ़िकै ॥

सुनै मनोरथ करि जो कोई, राम कृपा सम्पूरन होई ॥

गिरवर जन जगजीवन साँई, सदा राखु सत सरन गोसाई ॥

:: 13 ::

आरति ग्यान प्रगास तुम्हारी, सुरति रहै नित चरन हमारी ॥
मन पूरन का बिनै सुनावौं, करि दिढ़ ध्यान कृपा गुन गावौं ॥
मंत्र विवेक करै हिय वासा, महा प्रलै करि दूरि दुरासा ॥
परम ग्रन्थ का नावौं माथा, चरन ध्यान करु होऊ सनाथा।
सुमिरौं सब्द सकल सुभ बानी, राखौं सरन मोरि मन आनी ॥
गिरवर पर तुम करिये दाया, बुद्धि वृद्धि करिये नित छाया।

:: 14 ::

आरति जै समरथ गन नायक, दीन जनन पर सदा सहायक ॥
मंगल मूल सकल सुख दायक, आगर बुद्धि सबै विधि लायक ॥

बंदौ राज सुचरन अघानी, गनपति चरन सकल सुख खानी।
गिरवर बंदन अरज सुनावैं, सतमनि मंत्र सिद्धि करि पावैं ॥

:: 15 ::

आरति संकर गौरि मनाई, सुमिरत जासु परम पद पाई ।
त्रिभुवन पति पूरन परतापू, राम करत जाकर नित जापू।
गिरवर चरन सरन चितलावैं, जेंहि ते राम भक्ति सुचि पावै ।

:: 16 ::

आरति जै सतगुरु बजरंगी, कृपा सिन्धु समरथ सतरंगी।
सदा भाल सतलगन सुधारन, सतनामी जन चूक नेवारन ॥

पायक राम भक्ति भै हारी, असरन सरन प्रनत सुख कारी।
वेद पुरान विदित सतकरनी, सुमिरत पाप ताप त्रय हरनी ॥

इष्ट देव संतति सिर ताजा, महावीर राखी जन लाजा।
गिरवर पर अब करिये दाया, दे बलि दरस अभै कपि राया ॥

:: 17 ::

आरति पवन तनै की करहूँ , जासु कृपा दुस्तर भव तरहूँ।
लोचन अरुन संत सुख दायक, वीर गंभीर सरब विधि लायक ॥

तेज हरन अघ सरिस कृपासु , उदित प्रताप विदित जस भानू।
गिरवर कहत विनैं कर स्वामी, बसहू निरंतर अन्तर जामीं ॥

आरति प्रभु जगजीवन प्यारे, आदि साह जिन्ह पंथ पसारे।
चारि वजीर की आरति गाई, नाम ग्राम कहि भेद बताई ॥

दास गोसाई वास कमोली, ख्याम दास हरि सकरी खोली।
सोमवंश प्रभु दूलन दासा, धरम धाम जग विदित प्रगासा ॥

देवि दास प्रभु गौड़ कहायौ, तजि लछिमन गढ़पुरवा आयौ।
अब चौदह गद्दी घर गाई, चरन बन्दि कहि विनय सुनाई ॥

घाघर तीर सरदहा ग्रामा, प्रभु अहलाद केरि निज धामा।
उदयराम हरचन्दपुर वासी, उमा पुर प्रभु नेवल नेवासी ॥

बहिरेला मा भवानी दासा, अटवा मेड़न दास प्रगासा।
ग्राम हथौंधा माधौ दासा, वै द्विज गुरु चरनन की आसा ॥

पुनि सिव दास मंत्र दिढ़ पायो, चलि पंजाब मा गद्दी लायो।
प्रेमी परम पियारे दासा, धुनिया जात जरउली वासा ॥

बाल दास कोरी का जामा, अमरा नगर किहयो विश्रामा।
मंसा प्रभु ग्वारिज के वासी, दास कृपा खरथरी नेवासी ॥

साहेब बदली दास बखाना, राम दास दोउ अटँवा जाना।
साहेब कायम दास पठाना, वसि रसूल पुर सब जग जाना ॥

प्रभु अनूप सुत ग्रामहि आयौ, इन्द्रजीत अस नाम कहायौ।
'राम सहाय' जनम फल पायौ, मगन दरस रस आरति गायौ ॥

:: 19 ::

आरति प्रभु जगजीवन प्यारे, कबहूँ न होऊ नयन ते न्यारे ।
तुम हो नारायण की देहीं, कोऊ कोऊ जानत भक्त सनेही।
तुम प्रभु उभय अंक चित्त दीन्हा, त्रिवेनी महँ आसन लीन्हा।
जो कोई तुम्हरिन सरनै आवा, कीन्हयो कृपा भक्ति तिन्ह पावा।
जो कोऊ रुप तुम्हार बखानत, दुःख दरिद्र तिन्हके तुम भानत।
जेहि के मन तुम आहौ अधारा, सो भा मरम भरम से न्यारा।
जन गुरुदत्त याहि वर माँगे, नाम तुम्हार मोहि हित लागै ॥

:: 20 ::

आरति करहु सुनौ गुरु मोरे, विनवौ चरन दोऊ कर जोरे ।
बुद्धिहीन मै निपट अनाड़ी, केहि विधि अस्तुति करौ तुम्हारी ।
जुग जुग प्रभु लीन्हौ अवतारा, हम अस पतित बहुत निस्तारा ।
सत्तनाम सत सुमिरन पावौ, तुम्हरेन चरन शीश मै नावौ ।
राम लाल जन तुव कृति गावै, सब सन्तन के शीश नवावै ।

ॐसत्यनाम सत्य